राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी (चम्पावत)
Dept of Hindi

हिन्दी साहित्य

मानव मूल्य और भक्तिकालीन काव्य

मूल्य बोध का प्रयोग मानव-जीवन, समाज, राष्ट्र, साहित्य तक सीमित नहीं होते हैं, बल्कि इसके अन्तर्गत वे सभी मूल्य आते हैं जो आदि काल से लेकर आज तक प्रचलित हैं। अतः मूल्य व्यक्ति के जीवन, व्यक्तित्व और अस्तित्व का मुख्य केन्द्र है जो समाज द्वारा स्थापित और प्रत्येक व्यक्ति द्वारा मान्य है। 'साहित्य, समाज और जीवन' यह तीनों ही मूल्यों का भण्डार होता है जो यथार्थता के द्वारा पाठकों के समक्ष प्रस्तुत की जाती है। सही मूल्यों से युक्त व्यक्ति सदा अपने जीवन में सफल होता है और अन्य पथभ्रष्ट लोगों के मार्गदर्शन भी कराता है। मूल्य का अर्थ अच्छाई, गुणवान, कीमत, सुन्दरता आदि से जोड़ा जाता है।

साहित्य में यथार्थ चेतना और मूल्य बोध परस्पर समन्वित रूप में देखे जाते हैं। भक्तिकालीन काव्य उन मूल्यों का ही काव्य मय गान है। हृदय को गहरी सान्त्वना, आस्था, विश्वास, उन्मुक्त, ईजन, दया, करुणा और प्रेम की महत्ता का पाठ पढ़ाने वाला यह साहित्य भरत मुनि के 'रस' का हेतु है तो दूसरी ओर उदात्त तत्व का केतु है। जब कवि अपने युग जीवन के प्रति ईमानदार संवेदनाओं से जुड़ता है और सच्चे अर्थों में मानव जीवन का कवि होता है। तभी वह युग-युग तक मानव जाति के लिये अनजाने में संदेश देता रहता है।

शंकराचार्य के बाद अद्वैत दर्शन में कुछ परिवर्तन और संशोधन हुए और उनके आधार पर भक्ति का प्रचार प्रारंभ हुआ। रामानुजाचार्य का विशिष्टाद्वैतवाद, विष्णु स्वामी और वल्लभाचार्य का शुद्धाद्वैतवाद, निम्बार्क का द्वैताद्वैतवाद और मध्वाचार्य का द्वैतवाद, जिनमें ब्रह्म, जीव और जगत के सम्बन्धों की चर्चा करते हुए उनकी अद्वैतता पर विचार किया गया और भक्ति की दृढ़ता से स्थापना की गई। इन्हीं सिद्धान्तों का प्रचार करने के लिये दक्षिण में भक्ति आंदोलन चला, जिसके प्रमुख प्रवर्तक आलवार भक्त थे और उत्तर में इनका आधार लेकर राम भक्ति और कृष्ण भक्ति के विभिन्न सम्प्रदाय कायम हुए। चाहे संतकाव्य हो या प्रेमाख्यानक काव्य, राम भक्ति हो या कृष्ण भक्ति मार्ग— सबमें भक्ति की ही केन्द्रीयता है, भले ही भक्ति के स्वरूप में भिन्नता है। सर्वश्रेष्ठ रचनाओं से हिन्दी का भक्तिकालीन काव्य अत्यन्त समृद्ध है।

Principal
Rajkiya Mahavidyalaya
Amori, Champawat-262523
Uttarakhand

राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी (चम्पावत)
Dept of Hindi

हिन्दी साहित्य

प्रेम मार्ग

प्रेम ही भव-संतरण का एकान्तिक आधार है।
प्रेम से ही संसार बँधा हुआ है। जीवित भी प्रेम से ही है और
प्रेम से ही परमार्थ-तत्व की प्राप्ति सम्भव है। प्रेम से पृथक भक्ति
की कल्पना नहीं की जा सकती। संसार के प्रति प्रेम ऊर्ध्वमुखी
होकर जब ईश्वरीय सत्ता से जुड़ जाता है तो वही भक्ति का
रूप ले लेता है। ईश्वर अंशी है और जीव उसका अंश। वह पूर्ण
है। उसी पूर्ण से या अंशी से जीव एवं जगत की उत्पत्ति हुई है।
जो जीव अपने अंशी से उद्भूत होकर अलग हो गया है; वह
पुनः अपने अंशी से मिल जाने के लिये विकल है। जीव की
यह विकलता ही भक्ति का रूप है। जिस क्षण जीव विकलता या
विवशता का अनुभव करता है और परमात्मा से जुड़ने का
प्रयास करता है उसी क्षण भक्ति रेखांकित हो उठती है।

सूफी कवियों ने हिन्दू घरों में प्रचलित लोक-
कथाओं को आधार बनाकर काव्य प्रणयन किया जिसमें हिन्दू
देवी देवताओं, रीति रिवाजों, विश्वासों का भी उदारतापूर्वक निरूपण
है। इसमें हिन्दू मुस्लिम के बीच सांस्कृतिक सामन्जस्य को बल
मिला। इन कवियों की दृष्टि सेक्युलर रही है। त्याग, साहस
शौर्य, संघर्ष से भरे जिस प्रेम को इन कवियों ने सिरजा है
उससे आम जनता का सिर्फ मनोरंजन ही नहीं होता, अलौकिक
आशयों से युक्त होने के कारण उसे रूहानी सुकून भी मिलता है।
ये कवि ईश्वर प्रेम के साथ मानववाद का भी प्रचार करते हैं।
लोकतत्व की दृष्टि से यह काव्य महत्वपूर्ण है, तत्कालीन परिवेश
के सांस्कृतिक अध्ययन की दृष्टि से ये रचनाएं उपादेय हैं।
साहित्यिक भाषा के रूप में अवधी के निरन्तर विकास में इन
कवियों का योगदान अविस्मरणीय है। प्रेममार्गी सूफी काव्य प्रबन्धात्मक
है। लौकिक प्रेम में जो कठिनाइयां होती हैं, इसको दिखाकर सूफी
साधक जिसमें मुल्ला दाउद, कुतुबन, मंझन, मलिक मुहम्मद जायसी
तथा उसमान आदि प्रेममार्गीय कवियों ने परमपिता से मिलने में
कितनी मुसीबतों को झेलना पड़ता है, इसको अभिहित किया है।

गिरि, समुद्र ससि, मेघ रवि, सहि न सकहि वह आगि।
मुहमद सती सराहिऔ, जरै जो अस पिय लागि ॥

राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी (चम्पावत)
Dept of Hindi

हिन्दी साहित्य निर्गुण काव्य

हिन्दी के भक्ति काल के निर्गुण संतों की प्राणशक्ति, नैतिक बल, साधनात्मक सबलता सब कुछ उनके साहित्य में पाठकों को प्रेरणा प्रदान करने के लिये विद्यमान है। निर्गुण धारा के कवियों ने लोक-जीवन को सम्मान, अस्तित्व, आत्मशक्ति एवं समग्र मूल्यों की पीठिका तक पहुँचाने में उनका स्वर और संवेदना एक सी है। निर्गुण मत किसी उच्च शिष्ट या विशिष्ट वर्ग तक ही सीमित नहीं था। इसका सम्पर्क सीधे जन साधारण से और विशेषतः दीन, दुःखी, दरिद्र, पतित, शोषित तथा दलित वर्गों के उद्धार से था। निर्गुण कवियों ने अपनी बात जनसाधारण के पास तद्युगीन विकसनशील लोक भाषा में पहुँचायी न कि संस्कृत भाषा के माध्यम से क्योंकि इन्हें कवि, आचार्य अथवा विद्वान बनने का लोभ बिल्कुल नहीं था। निर्गुण धारा का विकास वैष्णव धर्म, सिद्धों, नाथों, सूफी मत शंकर के अद्वैतवाद से प्रेरणा-प्रभाव ग्रहण कर होता है। वैष्णवों से अहिंसा और प्रपत्ति भावना, सिद्धों-नाथों से जाति-पाति, कर्मकाण्ड, शास्त्र का नकार, कायायोग, शून्य समाधि, सूफियों से प्रेमतत्व को लेकर कबीर ने निर्गुण पंथ का प्रवर्तन किया। कबीर के पहले महाराष्ट्र में नामदेव हिन्दी में रचना कर चुके थे। कबीर की परम्परा में रैदास, रज्जब, दादू आदि संत कवि आते हैं। कबीरदास की कृति 'बीजक' की समीक्षा से ही संत साहित्य की सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त हो जाती है

इस धारा में ईश्वर को अजन्मा, अशरीरी, अगोचर माना गया है। परमतत्व एक ही है जो सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक है। जीव अज्ञानता के कारण क्षणभंगुर संसार को सत्य समझ परमात्मा से विमुख रहता है। सद्गुरु की कृपा से व्यक्ति को आत्मज्ञान मिलता है और ब्रह्मानंद की प्राप्ति होती है। ऋग्वेद में 'सत्य' शब्द परमात्मा का विशेषण है। अस्तित्व की आकांक्षा रखने वाले उसी की शरण में जायेंगे, उसी का भजन करेंगे। "सत्य" का अर्थ ही ऐसी सत्ता जिसका भजन किया जा सकता है। सम्पूर्ण निर्गुण काव्य वास्तविक आह्लाद से परिपूर्ण है—

साहब मिलि साहब भये, / कछु रही न तमाई।

राजकीय महावद्यिालय अमोड़ी (चम्पावत)
Dept of Hindi

लोक साहित्य

हमारे इतिहास में जो भी तेजस्वी, सुन्दर तत्व है वे सब कहीं न कहीं लोक में सुरक्षित हैं। हमारी कृषि, अर्थशास्त्र, दान, साहित्य, कला के नाना रूप, नृत्य, संगीत, पर्व, उत्सव, गीत, कथा, गाथा, त्यौहार, उत्सव, जीवन पद्धति, रीति-रिवाज सब कुछ भारतीय लोक में ओत प्रोत है। लोक हमारे जीवन का महासमुद्र है, उसमें भूत, भविष्य और वर्तमान सभी कुछ संचित है लोक साहित्य का कार्य लोक के समग्र अध्ययन का कार्य है जिसमें उत्सर्ग है, शौर्य है, प्रेम-प्रसंग है और परस्पर सहयोग है। ढोला-मारू के प्रेम प्रसंग, आल्हा-ऊदल की शौर्य गाथाएं, वीरसिंह देव का तुलादान, हरदौल का प्राणोत्सर्ग लोक साहित्य को प्राणवान बनाये हुए हैं और लोक की यह प्राणवत्ता जीवन मूल्यों को ह्रासोन्मुखी नहीं देखना चाहती। इसी से लोक साहित्य में सावन की मल्हारें हैं, झूले हैं। चकरी-भौंरे हैं और राखियाँ हैं। भादों की अँधियारी रात में कन्हैया की गूँज है। क्वाँर में भामुलिया, सुअटा, झिंझिया और नौरता है। लोक के जीवन मूल्य परिवार से जुड़े हैं, जहाँ माँ का आँचल है। पिता की झिड़कियाँ हैं। बहिन-भाई का सहज स्नेह है। ननद-भाभी के बोल हैं और इन्हीं के साथ चौका-बघार है। रीझ-खीझ है। गालियाँ और दुर्वचन हैं। इन्हीं में विद्ध होकर लोक साहित्य संघर्षों भरे जीवन को पुलक में सराबोर करता हुआ आगे बढ़ता है। इन्हें टूटने न दिया जाय। वर्जित न होने दिया जाय। लोक के सर्वाधिक शक्तिशाली प्रतिष्ठान उसकी बोली और भाषा हैं। इसी बोली और भाषा में उसके पुरखों का दाय संरक्षित है। पीढ़ियों का ज्ञान, वितान, अनुसंधान आदि सब सुरक्षित हैं। आजादी के पहले और बाद में लोक के इन्हीं बिन्दुओं को नष्ट करने का काम अंग्रेजों की नीतियों ने किया। दुनिया जानती है कि जिस दिन यह देश अपनी जातीय भाषाओं से कटेगा तत्क्षण वह अपने प्राचीन चिंतन और ज्ञान सम्पदा से भी कट जायेगा। तब यह एक मूक पशु की भाँति बन जायेगा। गाँधी ने लोक को ही जगाया और लोक से ही शक्ति माँगी। आज फिर समय की माँग है कि हम अपनी नई पीढ़ी को, जो लोक से प्रायः अनभिज्ञ होती जा रही है, उसे जोड़ने का प्रयत्न करें।

राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी (चम्पावत)
Dept of Hindi

हिन्दी साहित्य — लोक गाथा

लोक गाथा शब्द अंग्रेजी बैलेड (Ballad) का समानार्थी है। नृत्य के सहयोग से गाए जाने वाले गीत को ही बैलेड कहा जाता था परन्तु कालांतर में नर्तन वाला अंश गौण और न्यून होता गया। अब केवल कथात्मक गीतों को ही 'बैलेड' कहा जाने लगा। उत्तराखण्ड में इन्हें 'गाथा' ही कहा जाता है। महाराष्ट्र में इसे पवाड़ा कहते हैं। गुजरात में ऐसे दीर्घ कथानक-युक्त गीतों को 'कथा-गीत' तो राजस्थानी लोक-साहित्यकार इन्हें 'गीत-कथा' कहते हैं। उत्तरी भारत में गीतों के मुख्य पात्र के आधार पर ही नामकरण हो गया है; जैसे — कुँवर सिंह, विजयमल, आल्हा, लोरिकी, गोपीचंद नाम लेने पर इनसे सम्बन्धित गीतों का आशय स्पष्ट हो जाता है। इसकी सृष्टि के पीछे एक समुदाय काम करता है या समस्त जनता द्वारा इसकी रचना होती है। प्रो० चाइल्ड लोक साहित्य के प्रसिद्ध अमेरिकी विद्वान थे इनका मानना है कि लोक गाथा व्यक्ति विशेष की ही कृति है किन्तु कालांतर में उस रचना के रचयिता के व्यक्तित्व का प्रभाव समाप्त हो जाता है। लोक-गाथा में संगीत तथा पद्यात्मक शैली भी रहती है जबकि लोक कथा अनिवार्यतः गद्यात्मक होती है।

लोक गाथाओं में ऐतिहासिकता आदि भी मिल सकती है। स्थानीयता की गंध रहती है। लोक गाथाओं में श्रोताओं को आश्चर्य में डालने का अभाव पाया जाता है। लोक कथाओं की तरह इसमें उपदेशात्मक प्रवृत्ति का भी अभाव रहता है। विषयवस्तु प्रायः वीर अथवा प्रेम प्रसंगों से निर्मित होती है। प्रसिद्ध लोक-गाथाएँ हैं रानुला-मालूशाही, गौरा महेश्वर, तीलू रौतेली आदि हैं —

जब तक भूमि सूरज असमान धका धैं धैं,
तीलू की याद रली तीलू रौतेली धका धैं धैं।

इस प्रकार, यह गाथा तीलू रौतेली की युद्ध-सम्बन्धी वीरता और शौर्य का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत करने के साथ ही, उसके देशप्रेम और आत्मसम्मान को प्रदर्शित करती है।

अतः लोक गाथा के सम्बन्ध में कहा जा सकता है कि किसी लोक-भाषा के माध्यम से संगीत के आवरण में आबद्ध दीर्घ कथावस्तु की अभिव्यक्ति ही लोक गाथा है।

राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी (चम्पावत)
Dept of Hindi

हिन्दी साहित्य — लोक कथा

लोक कथा का स्थान लोक साहित्य में सर्वोपरि है। मानव सृष्टि के साथ ही कथा का भी सृजन हो गया। लोक कथाओं में मानव-मन का सुकोमल इतिहास अंकित रहा है। मनुष्य ने जो कुछ किया उसका विवरण तो इतिहास में आ जाता है लेकिन उसने अपने मनोजगत में जो कुछ सोचा-विचारा, रंगीन कल्पनाएं बुनी, सुन्दर सपने सँजोये उन सबका सूक्ष्म लेखा-जोखा लोककथाओं में सुरक्षित रहा है। ये सदियों से मनुष्य के मनोरंजन का साधन रही है। इनमें कुछ भी असम्भव नहीं होता। मनस्ताप के क्षणों में इन्होंने हमें बहलाया और घोर निराशा के क्षणों में अमिट आशा का संचार किया। जिस प्रकार एक सखी अपने मन के समस्त भाव अपनी सखी को कह देती है, तनिक भी दुराव नहीं रखती और अपने मन के अंतरंग भाव भी अपनी सखी के प्रति कह देती है। सब कुछ सच-सच अपनी सखी को बता देती है। अपना सुख-दुःख, खरा-खोटा, प्रेम-घृणा राग-द्वेष कुछ भी नहीं छुपाती है। उसी प्रकार कथा अपना सारा हाल-चाल संस्कृति के प्रति कह देती है। वह हमें अपने समय की सामाजिक, सांस्कृतिक, पारिवारिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक और भौगोलिक स्थितियों, परिस्थितियों और मनोवृत्तियों का परिचय सहज ढंग से करवा देती है। वह अतीत को प्रतीत से जोड़ती है और इसे भविष्य का निर्धारण करने में सहयोग करती है। वह ठीक वैसी ही होती है जैसे हमारे परिवार की दादी नानी होती है। वह दादी-नानी की तरह अगली पीढ़ियों को मनोरंजन के माध्यम से लोक संस्कृति का बोध करवाती है, उन्हें जीवन तय करने एवं सदाचरण का पाठ पढ़ाती है। इनमें व्यक्ति, स्थान या काल का कोई महत्व नहीं होता। वरन ये अपौरुषेय एवं शाश्वत रही है, इनकी अंगुली पकड़-कर ही मनुष्य ने देश-विदेश की यात्राएं की। सुदूर रेगिस्तान से लगाकर अपने खेत, खलिहान और घर के आँगन में अलाव के सहारे सारी रात जागकर बिता दी है।

इन कथाओं की शैली अत्यन्त ही मोहक तथा भाषा, लोकोक्तियों और अलंकारों से भरपूर होती है। आज लोक कथाओं के विस्तृत अध्ययन के लिए कथा रूपों के स्थान पर अभिप्रायों का प्रयोग होता है।

Principal
Rajkiya Mahavidyalaya
Amori, Champawat-262523
Uttarakhand

हिन्दी साहित्य

लोक गीत

जब मानव कभी भी स्वानुभूति से प्रेरित होकर दुःख तथा सुख की संवेदना से आंदोलित हुआ होगा तभी गीतों के स्वर उसके अधरों पर आ गये होंगे। मानव के हृदय में चाहे वह सभ्य हो या असभ्य अपनी स्वानुभूति को अभिव्यक्त करने की इच्छा और क्षमता भी अवश्य रहती है और उसकी रागात्मक वृत्ति लयबद्ध होकर निकलती है तभी गीत का रूप धारण कर लेती है। इसी प्रकार जब समस्त जन समाज में चेतन अचेतन रूप से जो भावनाएं गीतबद्ध होकर अभिव्यक्त होती हैं, उन्हें लोकगीत कहते हैं। इसके द्वारा लोग अपने उन्नत जीवन शैली को साकार कर मानवीय गुणों का अर्जन करते हैं। लिखित रूप में उपस्थित नहीं होने के बाद भी इसका स्वरूप चिर स्थाई है। इसमें काव्य की भावात्मकता, सौन्दर्य, लयबद्धता, छंद वृत्ति सबका निर्वाह काव्योचित रूप में हुआ है।

आदि मानव के हृदय में जो भावनाएं निःसृत हुई थीं वे ही आगे चलकर लोकगीत के रूप में परिवर्तित हो गईं। लोक गीत हमारी युग-युग से पोषित संस्कृति के परिचायक रहे हैं हमारे घरों के आँगन में लोक गीतों की गंगा प्रवाहमान रही है। इन लोकगीतों में मानसरोवर की तरह पिता, भरे-पूरे भंडार की तरह श्वसुर, बहती गंगा की तरह माँ, थकी पूरी बावड़ी की तरह सास, गुलाब के फूल की तरह पुत्र और उगते सूर्य की तरह स्वामी के रूप में ऐसी उदात्त कल्पनायें संजोई हैं जिनको लेकर हमारा पारिवारिक जीवन समृद्ध होता आया है। विवाह, पुत्री की विदा, त्योहार, उत्सव, ऋतु परिवर्तन इत्यादि अवसरों के लोक गीत अब भी लोगों के चित्त अभिभूत कर देते हैं उसमें राम, कृष्ण, शिव, पार्वती, सीता, कौशल्या और यशोदा, देवकी भी तभी गाये जाते हैं जब वे अपनी गौरव गरिमा भूल लोक से आत्मसात हो उसके सुख-दुःख को ओढ़ लेते हैं। ये गीत किसी व्यक्ति द्वारा रचित नहीं होते और न ही ये सामान्य जनमानस की अज्ञात सृष्टि हैं। जो लोक गीत लिपिबद्ध किये गये हैं उनमें उतना माधुर्य नहीं मिलता जितना उन्हें सुनकर प्राप्त होता है। ससुराल में बेचैन नायिका की गुहार है कि भाई की सूरत एक साल से नहीं देखी, अंगिका के एक गीत में कहती है —

“ नैहर म रहतौ त दूध भात हे खाइतो
मचिया बैठएल केसिया झाड़तौ हे। ”

Principal
Rajkiya Mahavidyalaya
...ori, Champawat-2025..
Uttarakhand